ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 169-170**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

शहाबुद्दीन इराकी के सर्वंगी

1. डॉ0 आनन्द कुमार सिंह
2. इमरान हसन

1. शोध निर्देशक, आचार्य– हिन्दी विभाग 2. शोध अध्येता, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), भारत

Received-12.11.2024, Revised-17.11.2024, Accepted-23.11.2024 E-mail : aaryvart2013@gmail.com

सारांशः अथ श्री सरबंगी ग्रंथ का तत्कार लिख्ते पन्ना' बोली सूबा तो सही चतुर सुजान, प्रबीन अति, अस्तुति कौ अंग–पन्ना सुरति परै जिनि पिरै मोह झूठा, भेट का अंग, पनाई लेल चपल मन गै गोबिंद गुण जीति–गुर सिख नृना को अंग। शहाबुद्दीन इराकी के सर्वंगी के सम्पादन का आधार दादू महाविद्यालय, जयपुर तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा के हस्तलेख हैं।

कुंजीभूत शब्द– सर्वंगी, सरबंगी, कतआत, ग्रंथ साध महिमा, ग्रंथ निरंजन अष्टक, रज्जब, संत साहित्य, गवाक्ष, धर्मशास्त्र

दादू महाविद्यालय, जयपुर तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा के हस्तलेख में 'आरत्युं कौ अंग' के पश्चात् कुछ लघु ग्रंथों का संग्रह है। ये ग्रंथ हैं:

1. ग्रंथ सद पराख्यान चतुर्भुज
2. ग्रंथ अबिगत लीला रज्जबदास
3. ग्रंथ त्रिबाण जोग पद
4. अजै मात्रा ग्रन्थ गोरखनाथ
5. सौंज दादूदयाल
6. ग्रंथ अंगभेद रज्जबदास
7. गुण नीसाणीं बाजिंद
8. ग्रंथ अकल लीला रज्जबदास
9. प्राण पारिखा रज्जबदास
10. मन प्रकाश प्राच्य रज्जबदास
11. सबदू प्रछ्या रज्जबदास
12. ज्ञान प्रछ्या रज्जबदास
13. ग्रंथ गावत्री पृथ्वीनाथ

इसके अतिरिक्त संस्कृत के दो लघु ग्रंथ 'ग्रंथ साध महिमा' और 'ग्रंथ निरंजन अष्टक' है। तत्पश्चात् संस्कृत के 188 श्लोकों का संग्रह है। अंत में 'परिशिष्ट–स' में फारसी की कतआत (चार पंक्तियों वाली रचनाएँ) हैं। इराकी सम्पादित सर्वगों के प्रारंभ में चार पंक्तियाँ लिखी गयी हैं:

श्रबंगी सु सुगंध अरगजा। छपन भोग लगाई।
यहु परिमल परसाद प्रांनपति। मिहमां कही न जाइ।
रामं जी सति श्री स्वांमी दादूदयाल जी सदा श्रबदा सहाइ ।
अथ सर्वगी ग्रंथ लिखतं । प्रथमहीं अस्तूति कौ अंग ।।

अस्तूति कौ अंग के अंतर्गत एक श्लोक है। तत्पश्चात् साखी प्रारंभ होती है। श्लोक में गुरू दादू की प्रार्थना की गयी है:

दादू नमो नमो निरंजन नमस्कार गुरु देवताः। बंदनं शरब साधवा प्रणामं पारंगतः।

'गुरूदेव कौ अंग' के अंतर्गत भी उक्त श्लोक आया है। संतों के लिए गुरु गोविंद से भी बड़े थे। इसलिए गुरुदेव की वंदना से ही इनके ग्रंथ का प्रारंभ होता है और अंत भी। सर्वगी की प्रथम साखी भी गुरु वंदना से ही संबंधित है:

गुरु अक्षर धर साध कवि। सबनि करूँ अस्तुति।
रज्जब की चकाचौंक परी। क्षिमा करौ हे सुति ।।

सर्वगी का महत्व– ग्रंथ का निर्माण कर रज्जब ने हिन्दी साहित्य का बड़ा भला किया है। सर्वंगी के कारण ही हम उन नामों से परिचित हो पा रहे हैं जिनकी आज चर्चा तक नहीं होती। सर्वंगी संत साहित्य के क्षेत्र में शोध के कई गवाक्षों को खोलती है। इस संग्रह से रज्जब के अनुभव और ज्ञान दोनों का पता चलता है। कुछ विद्वानों को यह शंका है कि रज्जबदास ने इस ग्रंथ की रचना दादू के जीवन में की होगी, क्योंकि दादू के ब्रह्मलीन होने के समय रज्जब की उम्र मात्र 36–37 वर्ष की थी। इनकी 'रज्जब वाणी' इसके पहले की है। रज्जब दास 122 वर्षों तक जीवित रहे। प्रश्न यह है कि जब रज्जब ने अपने दोनों महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना 37 वर्ष की उम्र में ही कर दी तो शेष 85 वर्ष तक क्या लिखते रहे। रज्जब के काशी जाने की घटना भी दादू के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् की है। किंवदन्ती है कि दादू के अन्य शिष्यों के साथ रज्जब भी काशी गये थे। कुछ लोगों का मानना है कि वे कुछ दिन रह कर वापस लौट आए। डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने भी दादू के शिष्यों के काशी जाने की सूचना दी है–'प्रसिद्ध सुन्दरदास छोटा था। वह छः वर्ष की अवस्था में दादू की शरण में भेज दिया गया था, किन्तु उनकी देखभाल में वह एक ही वर्ष रह सका, क्योंकि एक साल बीतते–बीतते दादूदयाल की मृत्यु हो गयी। इसलिए सुन्दरदास का गुरुभाई जगजीवनदास उसे काशी ले आया, जहाँ उसने अठारह वर्ष तक व्याकरण, दर्शन और धर्मशास्त्र की शिक्षा पाई। निर्गुण संतों में वही एक व्यक्ति हैं जिसे पोथी पत्रों की शिक्षा मिली थी।'

दादू पंथ में ज्ञान की दृष्टि से रज्जब की तुलना सुन्दरदास (छोटे) से की जाती है। सुन्दरदास ने दादू वाणी का अध्ययन भी रज्जबदास से किया था। यह बात अलग है कि सुन्दरदास को अन्य शास्त्रों में भी प्रवीणता प्राप्त थी। सुन्दरदास और रज्जब की तुलना करते हुए पुरोहित हरिनायाण शर्मा ने श्सुन्दर ग्रन्थावलीश में लिखा है. ष्रज्जब की उक्तियाँ मस्ताने सूफियों के ढंग की उतरी हैं और वे दादू दयाल के अधिक अनुरूप कही जा सकती हैं। इसी प्रकार रज्जबजी के जहाँ कुल मिलाकर 13 छोटे ग्रंथ हैं, वहाँ सुन्दरदास की वैसी रचनाएँ 37 से कम नहीं। रज्जब जी ने साखियाँ अधिक लिखी हैं और उनके पद भी बहुत सरस तथा गम्भीर हैं। 18 दादू पंथ में कवित्व की दृष्टि से रज्जब और सुन्दरदास (छोटे) को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। यदि यह मान लिया जाये कि रज्जब भी काशी गये थे तो निश्चित रूप से उन्होंने अपने काशी–प्रवास में बहुत कुछ शास्त्रीय ज्ञान अर्जित किया होगा। यह भी विभिन्न स्त्रोतों से पुष्ट होता है कि दादू की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने आँख न खोलने का प्रण भी लिया था। इन सभी बातों में से अपने को कुछ बीच का रास्ता निकालना होगा। रज्जब पठन–पाठन के लिए निश्चित रूप से अपनी आँख खोलते होंगे। अन्यथा बंद ही रखते होंगे। इसी तरह उन्होंने दादूजी के जीवन में अपनी कुछ वाणियों की रचना अवश्य की होगी। सर्वंगी के कुछ अंशों का सम्पादन भी किया होगा। इनके दोनों ग्रंथों की ग्रंथन की पद्धति ऐसी है कि उनमें निरंतर रचनाओं को जोड़ते जाने की पर्याप्त संभावना है। अंगों के नामों में अपने लिखे हुए और अन्य संतों की विषयानुकूल रचनाओं को जोड़ना बहुत आसान काम है। सर्वंगी में कुछ ऐसे भी कवियों की रचनाएँ हैं जिनका समय दादू की मृत्यु के बाद का है। निःसंदेह इनकी रचनाएँ बाद में जोड़ी गयी हैं। संस्कृत श्लोकों को देखकर लगता है

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

कि इनका ज्ञान रज्जब को बनारस जाने के बाद हुआ होगा या सुन्दरदास जैसे शास्त्रपंडित गुरुभाई की मदद से उनका चयन किया होगा। भर्तृहरि, व्यास और शंकराचार्य के विशाल संग्रह में से श्लोकों का चयन तत्कालीन सांगानेर या नरैना में तो संभव नहीं लगता। बार–बार प्रतिलिपि करने से श्लोक अशुद्ध हो गये हैं। अधिकांश श्लोकों का मूल स्वरूप बतलाता है कि इनका चयन उचित स्थान से किया गया है। प्रो० धर्मपाल सिंहल ने श्सरबंगीश की भूमिका में ठीक ही लिखा है, ष्इस पाण्डुलिपि का अध्ययन करने के उपरान्त हमारा यह विचार बना कि सर्वंगी कोई एक ग्रंथ मात्र नहीं अपितु एक सुदीर्घ परम्परा है, जिसका प्रचलन स्वयं दादूजी ने अपने जीवन काल में कर दिया था और उन्हीं के रहते उनके परम शिष्य संत रज्जबदास जी ने अंगबन्धु द्वारा इसको आगे बढ़ाया। 'सर्वंगी' जैसे ग्रंथ का सम्पादन एक बड़े धैर्य, अध्ययन, निष्ठा, ईमानदारी और भाषा–ज्ञान की माँग तो करता ही है, साथ ही साहित्य के प्रति महान् समर्पण की अपेक्षा भी रखता है। संतों की बानियाँ पंचबानी संग्रहों में मिलती हैं। वहाँ पाँच संत होते हैं। उन पाँच में प्रायः कबीर, दादू, नामदेव, रैदास और हरदास होते हैं। इसमें रचनात्मक और भाषिक विविधता की सर्वंगी की तुलना में कम गुंजाइश है। रज्जब की सर्वंगी में 138 संत हैं। एक ओर इस संग्रह में कबीर, रैदास जैसे पूर्वी बोली के संत हैं तो दूसरी ओर दादू, स्वयं रज्जब, वषना, गरीबदास, प्रेमदास, पीपा जैसे राजस्थानी बोलियों को बोलने, लिखने वाले संत हैं।

शंगन पंजाबी भाषाभाषी हैं, तो नानकदेव और नामदेव जैसे मराठी मूल के कवि भी इस संग्रह में हैं। अवधी और ब्रजभाषा में लिखने वाले संतों की बहुत बड़ी संख्या इस संग्रह में है। संस्कृत के महान् आचार्यों यथा शंकराचार्य, भर्तृहरि, व्यास और रामानन्द की भी रचनाओं को इस संग्रह में स्थान मिला है। इस संग्रह के कवि विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के हैं। ये ऐसे पंथों और मठों से हैं जिनकी दार्शनिक मान्यताएँ बिल्कुल भिन्न हैं। सर्वंगी में कबीरपंथी, दादूपंथी, रैदासी, सिखपंथी, रामानन्दी और पुष्टिमार्गी के साथ–साथ बड़ी मात्रा में गोरखपंथी योगी भी हैं। इन सभीपंथों के संतों, आचार्यों ने एक ही संग्रह में उनकी भाषा और उनकी रचनाओं के मूलभाव को बिना क्षति पहुँचाए संगृहीत किया गया है। इस दृष्टि से भी यह ग्रंथ महत्त्वपूर्ण है। इस ग्रंथ में काव्यरूपों और छंदों की विविधता भी उल्लेखनीय है। एक ही स्थान पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी और हिन्दी के छन्द तथा विविध काव्यरूप इस ग्रंथ में देखे जा सकते हैं। इस संग्रह में जहाँ संस्कृत के ''लोक'' हैं, वहीं फारसी के 'बैत' हैं। निर्गुण संतों के यहाँ प्रचलित साखी, सबदी है तो सगुण संतों और रीतिकालीन कवियों को प्रिय छंद, दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया और सोरठा भी हैं। ग्रंथों की एक सर्वथा नूतन पद्धति 'अंग' को अंगीकृत कर रज्जब ने संकलन–सम्पादन के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया है। यह पद्धति अध्याय, सर्ग, उच्छ्वास, उल्लास, अंक, तरंग, परिच्छेद, उद्योत, विमर्श से भिन्न तो है हीय समय, बोध, गोष्ठी, पल्लव और काण्ड से भी भिन्न है। सर्वथा पृथक् और नूतन अंगों के साथ रागों का निबंधन इस ग्रंथन प्रक्रिया को और अधिक सूक्ष्म बनाता है। रागों का नामोल्लेख बड़े विचार के साथ किया गया है। रागों का नाम रखने से पहले उनके गायन के समय और रचनाओं के भाव को ध्यान में रखा गया है। प्रो० शुकदेव सिंह इस ग्रंथन–विधान में जनाधृत कविता का सौन्दर्य–शास्त्र ढूँढ़ते हैं कि 'संगीतात्मक वर्गीकरण क्या कविता की प्रस्तुति और सम्प्रेषण से किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रखते। पूरी मध्यकालीन कविता के सम्पादन में जिस तरह का बौद्धिक प्रयास किया गया है उस बौद्धिक प्रयास की तहों को खोले बिना कम से कम संत–फकीरों की कविताओं को तो समझा ही नहीं जा सकता। ये सम्पादन पद्धतियाँ जनाधार की कविता की उस पठन–पाठन शैली की ओर इशारा करती हैं जो उससे सम्बद्ध होकर विकसित हुई। अंगों और रागों के रहस्य को समझे बिना संतों की कविता की अध्ययन प्रणाली को शास्त्रबद्ध नहीं किया जा सकता। देखना होगा कि क्या ये अंग, अभिव्यक्ति के नियामक हैं, उन्हें वर्गीकृत करते हैं अथवा किसी बिन्दु पर उन्हें विश्लेषित भी करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी उत्तरी भारत की संत परम्परा, पृ० 207.
2. रज्जब वाणी–साखी भाग, 193, अंग।
3. वही।
4. रज्जब वाणी–पदभाग, रामगिरि राग, पद–1.
5. वही, पद–2.
6. वही, पद–5.
7. वही, पद–12.
8. वही, पद–17.
9. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल–हिन्दी काव्य की निर्गुणधारा, पृ० 91.
10. सारंगी, छंद–7.
11. छप्पय ग्रंथ–13.
12. राघवदास भक्तमाल, पद–625.
13. आचार्य क्षितिमोहन सेन, दादू, पृ० 12.
14. प्रो० धर्मपाल सिंहल–सखंगी, पृ० 37.
15. सर्वंगी–प्रथम चार पंक्ति।
16. सर्वंगी–प्रथम चार पंक्ति।
17. सर्वंगी श्लोक।

*****